एणे समे जे सुख, थया जे साथमा।
कां जाणे वल्लभ, कां जाणे मारी आतमा।। ४ ।।

इस समय में जो सुख सखियों को मिला उसे वालाजी जानते हैं या मेरी आत्मा जानती है।

जेहेना मनमां जेह, उछाह हुता घणां।
सुख दीधां तेहेने तेह, पार नहीं तेहतणां।। ५ ।।

जिसके मन में जितनी उमंग थी, उसी के अनुसार वालाजी ने उसको वैसे ही बेशुमार सुख दिए।

एम रामत कीधी वन मांहें, रमीने आवियां।
ए सुख आ वन मांहें, भला भमाडियां।। ६ ।।

इस तरह से वन में रामतें खेलकर वापस आए (यमुना तट वापस आए)। इस वृन्दावन में अच्छे-अच्छे सुखदायी खेल खिलाए।

कहे इंद्रावती साथ, एणी वातो जेटली।
न केहेवाय कोटमों भाग, मारे अंग एटली।। ७ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि हे सुन्दरसाथजी! वालाजी की जितनी बातें मेरे अंग में हैं, उनका करोड़वां भाग भी वर्णन नहीं हो सकता है।

।। प्रकरण ।। ४४ ।। चौपाई ।। ८२३ ।।

राग गोडी–झीलणां

अणी हारे झीलण रंग सोहांमणां रे, आपण झीलसूं वालाजीने साथ।
रामत रमीने सहु आवियां, कांई पूरण थयो रंग रास।। १ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, हे सखियो! झीलने का आनन्द बड़ा सुहावना है। हम सब वालाजी के साथ झीलना करेंगे। रास पूरी हो गई है और हम सब रामतें खेल के आए हैं।

श्री राज कहे स्यामाजी सुणो, कांई तमारा मनमां जेह।
साथ सहुने मनोरथ, कांई रह्यो छे एक एह।। २ ।।

श्री राजजी कहते हैं, हे श्यामाजी! सुनो, तुम्हारे मन में तथा समस्त साथ के मन में, यह एक इच्छा बाकी है।

अंगे उमंग उपाइने, भेला नाहिए ते भली भांत।
झीलणां कीजे मन गमतां, खरी पूरूं तमारी खांत।। ३ ।।

अंग में उमंग भरकर हम अच्छी तरह से मिलकर नहाएं। आपके मन की इच्छा के अनुसार आपकी चाहना को झीलना करके मैं पूर्ण करूं।

वेलडिए कुसम प्रेमल, कांई वन झलूवे वाए।
फले रस चढ्या कै भांतना, भोम सोभा वाधंती जाए।। ४ ।।

बेल और फूलों की सुगन्ध से वन हवा में झूम रहे हैं। फल कई तरह के रसों से भरे हैं। इस तरह से इस धरती की शोभा बढ़ती जाती है।

Nijanand App

जल उछले उछरंगमां, लेहेरडियो लेहेर तरंग।
पसुपंखीना सब्द सुहामणां, कांई उलट पसरयो अंग।।५।।

यमुनाजी का जल उछल रहा है। लहर पर लहर की तरंगें आ रही हैं। पशु-पक्षियों के शब्द सुहावने हैं। इस तरह से सब सखियों के अंग-अंग में पूरी मस्ती भर गई है।

साथ मलीने भेलो थयो, आव्यो ते आनंद मांहें।
अमें सखियो त्रट ऊपर, वालाजीनी ग्रही बांहें।।६।।

सब सुन्दरसाथ मिलकर एकत्र हुए तथा आनन्द में आए। यमुनाजी के किनारे के ऊपर आने पर हम सखियों ने वालाजी की बांह पकड़ी।

वागा वधारीने कांठे मूकियां, कांई वस्तर पेहेरया झीलण।
सखी एक बीजीने आनंदमां, जल मांहें लागी ठेलण।।७।।

वागा (पोशाक) वस्त्र उतार कर किनारे पर रख दिए और नहाने के वस्त्र पहन कर सखियां एक-दूसरे को बड़े आनन्द के साथ जल में धकेलने लगीं।

त्रट जोईने जलमां सांचरया, साथ वालो स्यामाजी संग।
परियाणीने थया सहु जुजवा, जल मांहें कीजे आनंद।।८।।

सब सखियों, श्यामाजी और वालाजी ने यमुनाजी के किनारे को देखकर जल में प्रवेश किया तथा जल में आनन्द करने के लिए सलाह करके सब अलग-अलग हो गए।

एकीगमां साथ स्यामाजी, कांई बीजी गमां प्राणनाथ।
क्रीडा कीजिए जलमां, विलसिए वालाजीने साथ।।९।।

एक तरफ सखियां और श्यामाजी और दूसरी तरफ केवल श्री प्राणनाथ वालाजी। अब श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं—चलो, वालाजी के साथ जल में खेल का आनन्द लें।

जल उछाले उछरंगसूं, सहु वालाजीने छांटे।
वालोजी छांटे एणी विधसूं, त्यारे सर्व नासंतियो कांठे।।१०।।

सखियां उमंग के साथ जल को वालाजी के ऊपर उछालती हैं। वालाजी इस तरह से जल उछालते हैं कि सब सखियां किनारे पर भागती हैं।

वली सामी थाय सखियो, जल छांटतियो छोले।
वालोजी उछाले जल जोरसूं, त्यारे नासंतियो टोले।।११।।

सखियां फिर सामने आकर जल उछालती हैं। फिर से वालाजी इतनी जोर से जल उछालते हैं कि सखियां टोली-टोली होकर भागती हैं।

वली आवतियो उमंगसूं, वालो वीट्यो ते चारे गंम।
सूझे नहीं कांई जल आडे, आंखे आवी गयो छे तम।।१२।।

फिर से उमंग में भरकर सखियां आती हैं और वालाजी को चारों ओर से घेर लेती हैं। उछाले हुए जल की आड़ में सबकी आंखों के सामने अंधेरा हो गया और कुछ दीखता नहीं है।

Nijanand App

एणे समे हवे जे थयूं, बाई इंद्रावतीनूं काम।
विध विध विलसी वरसूं, भाजी हैडानीं हाम।। १३ ।।

इस समय श्री इन्द्रावतीजी ने वालाजी के साथ तरह-तरह के आनन्द करके हृदय की कामना पूर्ण की।

एम जल क्रीडा करी, पछे नाह्या ते पिउजी।
घणां रस लीधां अंग चोलतां, वालैयाने विलसी।। १४ ।।

तरह-तरह से जल के खेल करने के बाद वालाजी ने स्नान किया। श्री इन्द्रावतीजी ने वालाजी को मल-मलकर नहलाने का आनन्द लिया।

स्यामाजीने नवराविया, पेरे पेरे ते घणी प्रीत।
साथ सहु एणी विधे, कांई नाह्यो छे रूडी रीत।। १५ ।।

इसी तरह से श्यामाजी को तरह-तरह से बड़े प्यार से नहलाया। सब सखियों ने भी इस प्रकार अच्छी रह से नहाया।

सुंदरबाई इंद्रावती, कांई रत्नावती संग।
लालबाई पेहेले निसरयां, सिणगार कीधां सर्वा अंग।। १६ ।।

सुन्दरबाई, इन्द्रावती, रतनावती तथा लालबाई पहले निकलीं और अपना शृंगार किया।

वस्तर भूखण स्यामाजीने, पेहेराव्या भली भांत।
अधवीच आवीने वालैए, वेण गूंथी करी खांत।। १७ ।।

इन चारों सखियों ने श्यामाजी को वस्त्राभूषण अच्छी तरह से पहनाए। इसी बीच में वालाजी ने आकर श्यामाजी की चोटी गूंथी।

सिणगार सर्वे सजी करी, स्यामाजी घणूं सोहे।
दरपण लईने हाथमां, मन वालानूं मोहे।। १८ ।।

इस तरह से पूरा शृंगार सजने पर श्यामाजी अति शोभायमान हैं। वह हाथ में दर्पण लेकर वालाजी का मन मोहती हैं। चोटी गूंथने के समय वालाजी तथा श्यामाजी का मुख दर्पण में दिखाई देता है।

आसबाई कमलावती, कांई फूलबाई मल्या।
चंपावती चारे मली, सिणगार कीधां भेला।। १९ ।।

आसबाई, कमलावती, फूलबाई और चम्पावती इन चारों ने मिलकर एक साथ अपना शृंगार किया।

चार सखी मली श्रीराजने, कराव्या सिणगार।
वस्तर भूखण विधोगते, कांई सोभ्या ते प्राण आधार।। २० ।।

इन चारों सखियों ने मिलकर श्री राजजी को शृंगार कराया। वस्त्राभूषण पहन कर श्री राजजी महाराज शोभायमान हैं।

एक बीजीने करावियां, सिणगार ते सर्वे एम।
चितडू दईने में जोइयूं, कांई साथनो अतंत प्रेम।। २१ ।।

सखियों ने एक-दूसरे को इस प्रकार से शृंगार कराया। श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि मैंने ध्यान से सुन्दरसाथ के अत्यन्त प्रेम को देखा।

Nijanand App

परसेवे वस्तर साथना, नाहवा समे उतार्‍या जेह।
श्री राज बेठा तेह ऊपर, तमे प्रेम ते जो जो एह।। २२ ।।

सुन्दरसाथ ने नहाते समय पसीने के जो वस्त्र उतारे थे, श्री राजजी महाराज उनके आसन पर विराजमान हुए। श्री राजजी महाराज के इस प्रेम को तो देखो।

जमुनाजीने कांठडे, कांई द्रुमवेलीनी छांहें।
साथ सहु मलीने सामटो, कांई आव्यो ते आनंद मांहें।। २३ ।।

यमुनाजी के किनारे पेड़ों और लताओं की छाया में सब सखियां आनन्द भरी इकट्ठी हुईं।

बेठा मली आरोगवा, कांई सोभित जुजवी पांत।
सो सखी सों इंद्रावती, थया प्रीसने भली भांत।। २४ ।।

इसके बाद अलग-अलग पंक्तियों में आरोगने के लिए बैठ गईं तथा श्री इन्द्रावतीजी सी सखियों के संग परोसने के लिए तैयार हो गईं।

।। प्रकरण ।। ४५ ।। चौपाई ।। ८४७ ।।

राग वेराडी–भोग

फरतण फेर बाजोटिया, रंग पाकी परवाली।
कांबी पडगी जे कांगरी, जाणे रहिए निहाली।। १ ।।

पहलदार पक्के मूंगिया रंग की चौकी है, जिसके किनारे पर कांगरी की शोभा ऐसी बनी है, जो देखते ही बनती है।

चारे गमां वाल्या चाकला, बेठां वाली पलाठी।
सोभा मारा वालाजीनी सी कहुं, जे आतमाए दीठी।। २ ।।

चारों तरफ चाकला (आसन) बिछे हैं। जिस पर वालाजी पालथी (चौकड़ी) मारकर बैठे हैं। अपने वालाजी की शोभा जो मैंने अपनी आत्मा से अनुभव की, वह कहने में नहीं आती है।

श्रीठकुराणीजी श्रीराजसों, भेलां बेसे सदाय।
आसबाई सुंदरबाई, बेठा एणी अदाय।। ३ ।।

श्री ठकुरानीजी श्री राजजी के साथ सदा ही बैठती हैं। ऐसी अदा से आसबाई, सुन्दरबाई बैठी हैं।

हाथ पखाल्या पात्रमां, जुजवी जुगते।
पासे साथ बेठो मली, सहु कोय एणी विगते।। ४ ।।

एक पात्र के अन्दर विशेष युक्ति से उनके हाथ धुलवाए, पास में जो सखियां बैठी थीं, सभी ने इस तरह से हाथ धोए।

ऊपर वन रंग छाइयो, जाणे मंडप रचियो।
प्रीसणे साथ जे हुतो, ते तो रंग मांहें मचियो।। ५ ।।

ऊपर वन की छाया इस प्रकार छाई है जैसे मण्डप बना हो। परोसने वाले सुन्दरसाथ आनन्द में आ गए (तैयार हो गए)।

Nijanand App